IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

सामाजिक असमानता और वर्ग व्यवस्था का प्रभाव: भारत के संदर्भ में

M,- प्रियंका पांडे

समाजशास्त्र विभाग

शासकीय ठाकुर रणमत सिंह महाविद्यालय, रीवा, (म.प्र.)

सारांश: (Abstract)

सामाजिक असमानता और वर्ग व्यवस्था भारतीय समाज की एक जटिल और गहन समस्या है, जो प्राचीन काल से चली आ रही है और आज भी आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अपना प्रभाव डालती है। यह शोध पत्र भारत में सामाजिक असमानता के कारणों, रूपों, प्रभावों और समाधानों का विस्तृत विश्लेषण करता है, विशेष रूप से वर्ण व्यवस्था, जाति प्रथा और आधुनिक वर्ग विभाजन के परिप्रेक्ष्य में। अध्ययन से पता चलता है कि असमानता न केवल आय और धन के वितरण में प्रकट होती है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, सामाजिक गतिशीलता और यहां तक कि जीवन प्रत्याशा में भी गहराई से समाहित है। विश्व असमानता रिपोर्ट 2022 के अनुसार, भारत में शीर्ष 10% आबादी राष्ट्रीय आय का 57% हिस्सा रखती है, जबकि निचले 50% का हिस्सा मात्र 13% है। जाति और वर्ग के आधार पर यह असमानता और अधिक गहराती है, जहां अनुसूचित जाति (एससी) और अनुसूचित जनजाति (एसटी) के पास संपत्ति का हिस्सा सामान्य जातियों की तुलना में काफी कम है, लगभग 13% कुल असमानता के लिए जिम्मेदार। शोध में द्वितीयक स्रोतों जैसे राष्ट्रीय सर्वेक्षणों, रिपोर्टों, अध्ययनों और ऐतिहासिक ग्रंथों का उपयोग किया गया है, जिसमें लेवी इंस्टीट्यूट की वर्किंग पेपर, ऑक्सफोर्ड रिव्यू और अन्य शामिल हैं। मुख्य निष्कर्ष यह

DOI: 10.48175/IJARSCT-30879

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

है कि सामाजिक असमानता और वर्ग व्यवस्था सामाजिक संघर्ष, गरीबी, स्वास्थ्य असमानताओं और आर्थिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है। यह पत्र सामाजिक न्याय, समावेशी नीतियों जैसे आरक्षण, धन पुनर्वितरण और शिक्षा सुधारों की आवश्यकता पर जोर देता है, जो भारत की आर्थिक वृद्धि को सतत और समावेशी बनाने के लिए अनिवार्य हैं। साथ ही, यह सुझाव देता है कि जाति आधारित असमानताओं को कम करने के लिए सांस्कृतिक और राजनीतिक परिवर्तन आवश्यक हैं, ताकि एक समान समाज की स्थापना हो सके।

परिचय: (Introduction)

भारतीय समाज की संरचना प्राचीन काल से ही सामाजिक असमानता से प्रभावित रही है। वेदों, उपनिषदों और मनुस्मृति जैसे ग्रंथों में वर्ण व्यवस्था का वर्णन मिलता है, जो समाज को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र में विभाजित करती है। यह व्यवस्था मूल रूप से कर्म और गुणों पर आधारित थी, लेकिन समय के साथ जन्म-आधारित जाति प्रथा में परिवर्तित हो गई, जो आज भी सामाजिक असमानता का प्रमुख स्रोत बनी हुई है। आधुनिक भारत में वर्ग व्यवस्था आर्थिक स्थिति, शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक स्थिति पर आधारित है, लेकिन जाति का प्रभाव अभी भी प्रमुख है। सामाजिक असमानता से तात्पर्य संसाधनों, अवसरों और सम्मान के असमान वितरण से है, जो सामाजिक श्रेणियों जैसे जाति, वर्ग, लिंग, धर्म और क्षेत्र के आधार पर होता है। भारत में यह असमानता न केवल आर्थिक है, बल्कि सामाजिक बहिष्कार, भेदभाव और हिंसा का रूप भी लेती है।

ऐतिहासिक रूप से, ब्रिटिश उपनिवेशवाद ने असमानता को और बढ़ावा दिया। उन्होंने 1871 से जनगणना में जाति को शामिल कर इसे एक कठोर और जैविक व्यवस्था बना दिया, जिससे सामाजिक संघर्ष बढ़ाb7376a। स्वतंत्रता के बाद भारतीय संविधान ने अस्पृश्यता को समाप्त किया (अनुच्छेद 17) और आरक्षण व्यवस्था लागू की (अनुच्छेद 15, 16), लेकिन असमानता बनी रही। विश्व असमानता लैब की

ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

रिपोर्ट के अनुसार, 2014-2023 के बीच धन एकाग्रता में वृद्धि हुई, जहां शीर्ष 1% के पास 40% से अधिक धन है। यह असमानता वर्ग व्यवस्था से जुड़ी है, जहां उच्च वर्गों के पास संसाधन केंद्रित हैं, जबकि निम्न वर्ग हाशिए पर हैं।

शोध का उद्देश्य असमानता के कारणों, प्रभावों और समाधानों का विश्लेषण करना है। यह पत्र द्वितीयक डेटा पर आधारित है, जिसमें राष्ट्रीय ऋण एवं निवेश सर्वेक्षण (AIDIS) 1991-92 और 2002-03, भारत मानव विकास सर्वेक्षण (IHDS) 2004-05, और अन्य रिपोर्ट्स शामिल हैं। मुख्य प्रश्न हैं: सामाजिक असमानता कैसे सामाजिक संरचना को प्रभावित करती है? वर्ग व्यवस्था के क्या प्रभाव हैं? और समाधान क्या हैं? भारत में असमानता का प्रभाव बहुआयामी है – आर्थिक गरीबी, सामाजिक बहिष्कार, राजनीतिक अस्थिरता और स्वास्थ्य असमानताएं। उदाहरणस्वरूप, कोविड-19 महामारी ने असमानता को गहराया, जहां गरीब वर्गों को अधिक नुकसान हुआ। महिलाओं की आय हिस्सेदारी मात्र 18% है, जो एशियाई औसत से कम है।

सामाजिक प्रभाव: असमानता सामाजिक गतिशीलता को रोकती है, जहां जन्म वर्ग या जाति व्यक्ति की उपलब्धियों को निर्धारित करती है। आर्थिक प्रभाव: धन का असमान वितरण गरीबी बढ़ाता है, जहां एससी/एसटी समूहों की संपत्ति हिस्सेदारी कम है। राजनीतिक प्रभाव: यह संघर्ष और अस्थिरता पैदा करता है, जैसे जाति आधारित हिंसा। भारत जैसे विविध समाज में असमानता राष्ट्रीय एकता को चुनौती देती है। इस पत्र में इन पहलुओं का विस्तृत विश्लेषण किया जाएगा, जिसमें ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से लेकर समकालीन मुद्दों तक का समावेश है। प्राचीन भारत में वर्ण व्यवस्था कर्म आधारित थी, लेकिन मध्यकाल में जाति कठोर हो गई। आधुनिक काल में, वैश्वीकरण और बाजारवाद ने वर्ग असमानता को नया रूप दिया, जहां पूंजीवादी व्यवस्था उच्च वर्गों को लाभ पहुंचाती है।

Copyright to IJARSCT
www.ijarsct.co.in
DOI: 10.48175/IJARSCT-30879

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

साहित्य समीक्षा : (Literature Review)

सामाजिक असमानता पर साहित्य प्राचीन से आधुनिक तक विस्तृत है। मनुस्मृति में वर्ण व्यवस्था का वर्णन है, जो असमानता को धार्मिक आधार प्रदान करती है। आधुनिक साहित्य में, डॉ. बी.आर. अंबेडकर की रचनाएँ जैसे "एनिहिलेशन ऑफ कास्ट" असमानता को जाति से जोड़ती हैं, तर्क देते हुए कि जाति व्यवस्था सामाजिक न्याय को बाधित करती है।

लेवी इंस्टीट्यूट की वर्किंग पेपर नंबर 566 **में जाति और धन असमानता का अध्ययन है: एससी/एसटी के पास धन सामान्य जातियों से कम है, जो** 13% **कुल असमानता के लिए जिम्मेदार है।** 2002 **के डेटा से पता चलता है कि कुल गिनी गुणांक** 0.655 **है, जिसमें बीच-समूह असमानता** 12.6% **है। एससी/एसटी की औसत संपत्ति सामान्य जातियों की तुलना में** 40-50% **कम है, और उच्च जातियों के पास** 55% **धन है। यह अध्ययन यित्ज़हाकी डीकंपोजिशन का उपयोग करता है, जो ओवरलैपिंग इंडेक्स से जाति स्तरीकरण को मापता है। उच्च जातियों का ओवरलैपिंग इंडेक्स** 0.84 **है, जो स्तरीकरण दर्शाता है।**

ऑक्सफोर्ड रिव्यू ऑफ इकोनॉमिक पॉलिसी में जाति, वर्ग और असमानता पर चर्चा है: भारत में अंतरसमूह असमानता जाति और धर्म से जुड़ी है, जहां उच्च जातियां 25% **आबादी होने के बावजूद** 55% **धन रखती हैं, और** 90% **अरबपति धन उच्च जातियों के पास है। यह रिपोर्ट नीति प्रभावों पर जोर देती है, जैसे समावेशी विकास की आवश्यकता।**

पीएनएएस में प्रकाशित अध्ययन सामाजिक हानि और जीवन प्रत्याशा पर है: नौ भारतीय राज्यों में, आदिवासी महिलाओं की जीवन प्रत्याशा उच्च जाति हिंदुओं से 4 **वर्ष कम है, दलितों की** 3 **वर्ष, और मुसलमानों की** 1 **वर्ष। आर्थिक स्थिति आधे से कम असमानता की व्याख्या करती है, शेष भेदभाव से।**

ट्रांससाइंस पत्रिका में सामाजिक असमानता का विश्लेषण है: जाति व्यवस्था औपनिवेशिक काल में कठोर हुई, और आज ग्रामीण-शहरी सेटिंग में बनी हुई है। दलित मुख्यतः हाशिए वाले वर्ग में हैं, और सामाजिक

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

गतिशीलता सीमित है। पूंजीवाद गतिशीलता बढ़ाता है, लेकिन पूर्वऔपनिवेशिक संरचनाएं असमानता को पुनरुत्पादित करती हैं।

हिंदी साहित्य में, "भारत में सामाजिक असमानता एवं वर्ग संघर्ष" में जातिवाद को मुख्य कारण बताया गया है, जो उच्च-निम्न वर्गों में विभाजन पैदा करता है। यह संघर्ष हिंसा और बहिष्कार का रूप लेता है। "भारत में व्याप्त सामाजिक असमानता" में आर्थिक असमानता को मुख्य कारक माना गया है, जो 77.4% आबादी को गरीबी में रखती है। ईग्यांकॉश की इकाई में जाति और वर्ग को लोकतांत्रिक व्यवस्था से जुड़ा बताया गया है, जहां असमानता विकास को बाधित करती है।

पीएमसी में "कास्ट इन 21स्ट सेंचुरी इंडिया" में जाति असमानताओं को अवसर और परिणाम में विभाजित किया गया है: दलितों की शिक्षा 5.23 वर्ष, उच्च जातियों की 8.18 वर्ष। आय में 50% असमानता शिक्षा से, शेष भेदभाव से।

साहित्य से स्पष्ट है कि असमानता बहुआयामी है, और समाधान के लिए समावेशी विकास, आरक्षण और सांस्कृतिक परिवर्तन आवश्यक हैं।

सामाजिक असमानता और वर्ग व्यवस्था के कारण :

(Causes of Social Inequality and Class System)

भारत में सामाजिक असमानता के प्रमुख कारण ऐतिहासिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक हैं। ऐतिहासिक रूप से, वर्ण व्यवस्था प्राचीन कारण है, जो समाज को विभाजित करती है। ब्रिटिश काल में जनगणना ने जाति को संस्थागत बनाया, जो सामाजिक स्तरीकरण को बढ़ावा देता है।

आर्थिक कारण: कम कर-जीडीपी अनुपात (17%) और प्रतिगामी कर प्रणाली असमानता बढ़ाती है। मुद्रास्फीति गरीबों को अधिक प्रभावित करती है। बेरोजगारी (6%) और अल्परोजगारी वर्ग अंतर बढ़ाते हैं।

IJARSCT
International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology
International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal
ISSN: 2581-9429
Volume 6, Issue 2, January 2026
Impact Factor: 7.67

वैश्वीकरण और तकनीक पूंजी मालिकों को लाभ देते हैं, जबकि मजदूर वर्ग हाशिए पर रहता है। धन असमानता में, उच्च जातियां 55% धन रखती हैं।

सांस्कृतिक कारण: जाति और लिंग भेदभाव, जहां महिलाओं की आय हिस्सेदारी कम है। धर्म और परंपराएं असमानता को बनाए रखती हैं, जैसे हिंदू धर्म में जाति और पितृसत्ता। भ्रष्टाचार और कमजोर प्रशासन असमानता को बनाए रखते हैं। व्यक्तिगत स्तर पर, स्वार्थ और सामाजिक दबाव असमानता को बढ़ाते हैं।

राजनीतिक कारण: सत्ता का केंद्रीकरण उच्च वर्गों में, जो नीतियां अमीरों के पक्ष में बनाती हैं। आरक्षण के बावजूद, क्रियान्वयन की कमी असमानता को जारी रखती है। वैश्वीकरण से आर्थिक असमानता बढ़ी है, जहां अमीर-गरीब की खाई चौड़ी हुई है।

प्रभाव :(Impacts)

सामाजिक प्रभाव (Social Impacts)

असमानता बहिष्कार पैदा करती है, जहां निम्न वर्ग शिक्षा और स्वास्थ्य से वंचित रहते हैं। जाति हिंसा बढ़ती है, जैसे दलितों पर अत्याचार। सामाजिक गतिशीलता कम होती है, जहां जन्म वर्ग भाग्य निर्धारित करता है। महिलाएँ और बच्चे अधिक प्रभावित होते हैं, जैसे शिक्षा में दलित बच्चों की प्रवीणता 48% बनाम उच्च जातियों की 61%। सामाजिक नेटवर्क में, उच्च जातियां 1.20 कनेक्शन रखती हैं, जबकि दलित 0.98 है। ग्रामीण क्षेत्रों में दलित अलग-थलग रहते हैं, और शहरीकरण असमानता को पुनरुत्पादित करता है।

आर्थिक प्रभाव: (Economic Impacts)

धन एकाग्रता गरीबी बढ़ाती है; शीर्ष 1% के पास 22% आय। एससी/एसटी की संपत्ति कम, जो विकास बाधित करती है। बेरोजगारी और मुद्रास्फीति निम्न वर्ग को हानि पहुंचाती है। आय में दलितों की हिस्सेदारी कम, जहां ब्राहमण Rs 27,712 कमाते हैं बनाम दलित Rs 19,820। स्वास्थ्य व्यय में केरल जैसे राज्यों में जाति असमानता गहराती है।

IJARSCT

International Journal of Advanced Research in Science, Communication and Technology

International Open-Access, Double-Blind, Peer-Reviewed, Refereed, Multidisciplinary Online Journal

ISSN: 2581-9429

Volume 6, Issue 2, January 2026

Impact Factor: 7.67

राजनीतिक प्रभाव: (Political Impacts)

असमानता संघर्ष पैदा करती है, जैसे आरक्षण विरोध। राजनीति में जाति वोट बैंक बनती है। यह अस्थिरता बढ़ाती है, और लोकतंत्र को कमजोर करती है। उच्च वर्ग नीतियां प्रभावित करते हैं, जबकि निम्न वर्ग हाशिए पर।

भारत मामले अध्ययन :(Case Studies from India)

बिहार में जाति असमानता: उच्च जातियां धन रखती हैं, निम्न वर्ग गरीब। महाराष्ट्र में दलित आंदोलन असमानता को चुनौती देते हैं। उत्तर प्रदेश में जीवन प्रत्याशा असमानता: आदिवासी 5 वर्ष कम जीते हैं। केरल में स्वास्थ्य व्यय असमानता: दलित अधिक बोझ उठाते हैं।

निष्कर्ष :(Conclusion)

सामाजिक असमानता भारत की प्रगति में प्रमुख बाधा है। समाधान: धन कर, शिक्षा निवेश, आरक्षण मजबूत। समावेशी विकास, जागरूकता और सांस्कृतिक सुधार आवश्यक।

संदर्भ :(References)

1.Caste in 21st Century India: Competing Narratives - PMC

2.Working Paper No. 566 Caste and Wealth Inequality in India

3.Caste, class, race, and inequality: insights for economic policy

4.Social disadvantage, economic inequality, and life expectancy in nine Indian states

5.Social class related inequalities in household health expenditure

6.Social Inequality in India

7.**भारत में सामाजिक असमानता एवं वर्ग संघर्ष**

8.**भारत में व्याप्त सामाजिक असमानता**

9.**इकाई असमानता : जाति और वर्ग**